-: सामाजिक व धार्मिक पुनर्जागरण :-

1. राजाराम मोहन राय →

→ उपनाम →
- → पत्रकारिता का अग्रदूत
- → भारतीय पुनर्जागरण का प्रभात सितारा
- → आधुनिक भारत का प्रथम सुधारक
- → आधुनिक भारत का पिता
- → राष्ट्रवाद का जनक
- → अतीत तथा भविष्य के बीच सेतु

→ जन्म → 1772, राधानगर (बंगाल)

→ विरोध किया
- → सती प्रथा
- → बहु पत्नी प्रथा
- → जातिवाद

→ समर्थन किया → आधुनिक शिक्षा

→ राम मोहन राय प्रथम भारतीय थे जिनसे ब्रिटीश संसद ने भारतीय मामलों में परामर्श मांगा।

→ 1814 में राजा राम मोहन राय ने कलकता में "आत्मीय सभा" की स्थापना की।

→ 1817 में राम मोहन राय ने "डेविड हेयर" को कलकता में "हिन्दू कॉलेज" की स्थापना मे सहयोग दिया।

→ 20 Aug. 1828 को कलकता में ब्रह्म समाज की स्थापना की।

→ राजा राम मोहन राय समाचार दर्पण तथा बंगदूत अखबारों से सती प्रथा का विरोध किया।

→ 1829 में विलियम बैंटिक ने "बंगाल अधिनियम 17" के तहत सती प्रथा को गैर-कानूनी घोषित किया।

KC Choudhary_Mobile Apps

Scanned by CamScanner

→ मुगल सम्राट अकबर II ने राममोहन राय को "राजा" की उपाधि देकर अपनी पेंशन बढवाने के लिए ब्रिटीश सम्राट "विलियम IV" के दरबार में इंग्लैण्ड भेजा।

→ यूरोप जाने वाला प्रथम भारतीय → राजा राम मोहन राय

→ 1833 में ब्रिस्टल (इंग्लैण्ड) में राजा राम मोहन राय की मृत्यु हुई।

– उनकी समाधि (ब्रिस्टल, इंग्लैण्ड) पर हरिकेलि नाटक के अंश लिखे हुए है।

→ राम मोहन राय वैष्णव बंगाली थे।

→ उन्हे बांग्ला, संस्कृत, अरबी, फारसी, अंग्रेजी, हिब्रु, लेटिन भाषाओ का ज्ञान था।

→ उन्होने 1803–1814 के बीच "ईस्ट इण्डिया कम्पनी" मे नौकरी की।

→ राजा राम मोहन राय के प्रमुख शिष्य द्वारका नाथ टैगोर थे।

→ समाचार पत्र →
(1) संवाद कौमुदी
(2) समाचार चंद्रिका
(3) प्रज्ञा चांद
(4) मिरातुल अखबार
(5) ब्रह्मोनिक मैग्जीन
(6) बंगदूत (यह बांग्ला, फारसी व हिन्दी तीनो भाषाओं में छपता था)

→ पुस्तके →
(1) तुहफात-उल-मुवाहिदीन। एकेश्वरवादियो का उपहार। Gift to Monotheist (1802)
(2) प्रीसेप्ट्स ऑफ जीसस (ईसा के नीति वचन)
(3) हिन्दु उत्तराधिकारी के नियम

HC Choudhary - Mobile Apps

Scanned by CamScanner

2. स्वामी दयानंद सरस्वती →

→ उपनाम →
- → सैनिक हिन्दुत्व का जनक
- → उत्तर भारत का हिन्दू लुथर

→ जन्म → 12 फरवरी 1824, मौरवी (टंकारा, गुजरात)

→ मूल नाम → मूलशंकर तिवाड़ी

→ गुरु
- → विरजानंद दंडीश
- → पूर्णानंद

→ पूर्णानंद ने इनका नाम दयानंद रखा।

→ स्वामी दयानंद को "सिंधु मारहू" (सिंधु विजयता) कहा गया है।

→ 1863 में धार्मिक आडम्बरो तथा अंधविश्वास का खण्डन करने के लिए "पाखण्ड खंडिनी पताका" फहराई।

→ 1875 में बम्बई में "आर्य समाज" की स्थापना की।

→ 1877 में आर्य समाज का मुख्यालय "लाहौर" ले गए।

→ दयानंद ने "वेदो की ओर लौटो" तथा "भारत भारतीयो के लिए" का नारा दिया।

→ दयानंद ने "04 स्व" की अवधारणा दी –

(1) स्वराज
(2) स्वधर्म
(3) स्वदेशी
(4) स्वभाषा

HC Chaudhary - Mobile Apps

Scanned by CamScanner

→ स्वामी दयानंद ने नाना साहब, अजीमुल्ला खाँ, तात्या टोपे, कुँवर सिंह तथा बाला साहब को 1857 की क्रांति के लिए प्रेरित किया तथा रोटी व कमल को क्रांति का प्रतीक घोषित किया।

→ स्वामी दयानंद ने उदयपुर में 1882 मे "परोपकार हितकारिणी सभा" की स्थापना की।

- जिसका संरक्षक मेवाड़ महाराणा सज्जन सिंह को बनाया गया।

→ उदयपुर प्रवास के दौरान "सत्यार्थ प्रकाश" का अधिकांश भाग लिखा। (Printing → Ajmer) (Published → Udaipur)

→ 1883 में जोधपुर मे महाराजा जसवंत सिंह II की प्रेमिका "नन्ही जान" ने स्वामी दयानंद को दूध मे काँच पीसकर पिलाया जिसके कारण अजमेर में 1883 में दीपावली के दिन स्वामी जी की मृत्यु हुई।

→ अन्तिम उपदेश → "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"

(ऐसे कर्म करो जिससे संसार के श्रेष्ठ मनुष्य बनो।)

→ स्वामी दयानंद ने शूद्रो तथा स्त्रियो को वेद अध्ययन का अधिकार दिलाने तथा यज्ञोपवित धारण के लिए आंदोलन चलाया।

→ स्वामी दयानंद ने हिन्दु धर्म छोड़ चुके लोगो को पुनः हिन्दु धर्म मे शामिल करने के लिए शुद्धि आन्दोलन चलाया।

→ दयानंद का आर्य समाज पहला धार्मिक आंदोलन था जो पूर्णतया प्राचीन भारतीय संस्कृति पर आधारित था तथा इसने (आर्यसमाज) पाश्चात्य संस्कृति से कुछ भी ग्रहण नही किया।

HC Choudhary - Mobile Apps

Scanned by CamScanner

→ वैलेन्टाइन शिरोल ने आर्यसमाज तथा बाल गंगाधर को भारतीय अशांति का जनक कहा।

→ V. D. सावरकर ने दयानंद को स्वतंत्रता संग्राम का प्रथम योद्धा बताया।

→ सुभाष चंद्र बोस ने स्वामी दयानंद को आधुनिक भारत का आद्य निर्माता (प्राचीन निर्माता) बताया।

→ दयानंदी की प्रमुख रचनाएँ →

1. सत्यार्थ प्रकाश
2. ऋग्वेद भाष्य
3. यजुर्वेद भाष्य
4. चतुर्वेद विषय सूची
5. पंचमहायज्ञ विधि
6. गौकरुणा निधि
7. आर्योद्देश्य रत्नमाला

3. स्वामी विवेकानंद →

→ जन्म → 12 जनवरी 1863 (कलकत्ता)
(12 जनवरी → युवा दिवस)

→ मूल नाम → नरेन्द्र नाथ दत

→ भाई → भूपेन्द्र नाथ दत्त (क्रांतिकारी)

→ पिता → विश्वनाथ कायस्थ
माता → भुनेश्वरी

→ गुरु → रामकृष्ण परमहंस (गदाधर चट्टोपध्याय)

→ विवेकानंद रॉक मेमोरियल "कन्याकुमारी (तमिलनाडु) मे है।

RC Choudhary - Mobile Apps

Scanned by CamScanner

→ रामकृष्ण परमहंस ने नरेन्द्र का नाम "विविदिषानंद" रखा जिसे खेतड़ी के राजा अजीत सिंह ने बदलकर 'विवेकानंद' रखा।

→ विवेकानंद खेतड़ी को अपना दूसरा घर कहते थे।

→ खेतड़ी की नर्तकी मैना बाई के भजन "प्रभू जी मोरे अवगुण चित न धरो ----" सुनकर विवेकानंद ने मैना बाई को "ज्ञानदायनी माँ" कहा।

→ अजीत सिंह ने विवेकानंद की विदेश यात्रा की व्यवस्था की तथा उन्हे साफा भेंट किया।

→ 1893 मे शिकागो (अमेरिका) मे प्रथम विश्व धर्म सभा मे भाग लिया।

→ "न्यूयार्क हेराल्ड" ने लिखा "ऐसे ज्ञान से सम्पन्न देश मे धर्म प्रचारक भेजना हमारी मुर्खता है जहाँ से विवेकानंद आते है।"

→ 1896 मे विवेकानंद ने New York मे वेदांत सभाओ की स्थापना की।

→ 1896 मे "रामकृष्ण मिशन" की स्थापना की जिसका ध्येय वाक्य था → "आत्मनो मोक्षार्थ जगत् हिताय च:।"

→ रामकृष्ण मिशन का पहला मठ "बारानगर (कलकता) मे स्थापित हुआ बाद मे "बेलुर (कलकता) मठ की स्थापना हुई तथा एक अन्य मठ "मायावती (अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड) मे है।

→ रामकृष्ण कृष्ण मिशन की शाखा राजस्थान मे "खेतड़ी (झुंझुनू)" मे स्थापित की गई।

→ विवेकानंद की प्रमुख शिष्या → "मारग्रेट नोबल" थी जिसे विवेकानंद ने "सिस्टर निवेदिता" नाम दिया।

HC Choudhary - Mobile Apps
Scanned by CamScanner

80

→ विवेकानंद की मृत्यु 04 July 1902 को बेलूर मठ मे 39 व
की अवस्था मे हुई।

→ पुस्तके →
"मै समाजवादी हूँ।"
1. "राजयोग"
2. "ज्ञानयोग"
3. "कर्मयोग"
4.

→ अखबार →
1. प्रबुद्ध भारत
2. उद्‌बोधन

→ कथन →
1. "कमजोरी पाप है।"
2. "भारत को इस्पात के स्नायु तंत्र की आवश्यकता है।"
3. "हमारा धर्म रसोई घर में है।"
4. "जब पड़ौसी भूखें मर रहा हो तो मंदिर मे भोग चढाना पा
5. "जिस प्रकार सारी धाराएँ सागर में मिलती है उसी प्रक
सारे धर्म ईश्वर की ओर ले जाते है।"
6. "उतिष्ठत, जाग्रत, प्राप्य वरान्नि बोधत"

→ विवेकानंद का दर्शन → नववेदांत

→ विवेकानंद को "वीर संयासी", "तुफानी हिन्दु" तथा
"नव हिन्दुवाद" का प्रणेता" कहा जाता है।

→ विवेकानंद को सुभाष चंद्र बोस ने "राष्ट्रीय आंदोलन का
आध्यात्मिक पिता" कहा।

→ रविन्द्रनाथ टैगोर ने कहा, "यदि आप भारत को जानना चाहते हो तो
विवेकानंद को पढो।"

→ विवे

HC Choudhary - Mobile Apps

Scanned by CamScanner